CONTEMPORARY RESEARCH IN INDIA
ISSN 2231 - 2137

पत्रकारिता का स्वरूप : एक अध्ययन

राजू बैठा, *शोधार्थी, हिन्दी विभाग, विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार*

Received: 09/01/2018	Edited: 23/01/2018	Accepted: 05/02/2018

सार संक्षेप: *अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण मनुष्य होने की बुनियादी शर्ते है। मुनष्य अपने अनुभव एवं विभिन्न प्रकार की भावनाओं को दूसरे तक पहुँचान चाहता है। किसी घटना को परखना और अपने शब्दों में दूसरे को बताना मुनष्य की स्वाभाविक विशेषता है। इस प्रकार मनुष्य की सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति के कारण पत्रकारिता का विकास संभव हुआ। अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता वास्तविक रंगमंच अखबारों की दुनिया है। इसी चौथी दुनिया में सत्त लोक एवं उसकी अभिव्यक्ति की गुणवत्ता की पहचान होती रहती है ।*

मुख्य शब्द: *अभिव्यक्ति, पत्रकारिता, चेतना, मूल्यगत परिपक्वता।*

अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण मनुष्य होने की बुनियादी शर्ते है। मनुष्य अपने अनुभव सत्य एवं विभिन्न प्रकार की भावनाओं को दूसरे तक पहुँचाना चाहता है। इसी क्रम में मनुष्य ने भाषा एवं लिपि का अविष्कार किया, पत्रकारिता मनुष्य के विकास की अगली कड़ी है।

किसी घटना को परखना और अपने शब्दों में दूसरे को बताना मनुष्य की स्वाभाविक विशेषता है। यह उसकी स्वाभाविक प्रवृति का परिणाम जन-संचार माध्यम है, हिंदी पत्रकारिता के मूर्धन्य विद्वान डॉ॰ अर्जुन तिवारी बताते है कि ''जिस प्रकार ज्ञान प्राप्ति की उत्कंठा, चिंतन एंव अभिव्यक्ति की आकांक्षा ने भाषा को जन्म दिया, ठीक उसी प्रकार समाज में एक दूसरे का कुशल क्षेम जानने की प्रबल इच्छा-शक्ति ने पन्नों के प्रकाशन का जन्म दिया।''[1]

इसके आगे वे बताते हैं कि पहले ज्ञान रूपी दिव्य शक्ति जो सुविधा प्राप्त मुठ्ठीभर लोगों को प्राप्त थी उसे पत्रकारिता द्वारा सर्वजन सुलभ कराया गया। इस प्रकार परिस्थितियों का अध्ययन चिन्तन मनन और आत्माभिव्यक्ति की प्रवृति तथा सब जन हिताय सब जन सुखाय के प्रति व्यग्रता ने पत्रकारिता को जन्म दिया।[2]

इस प्रकार मनुष्य की सामाजिक चेतना की अभिव्यक्ति के कारण पत्रकारिता का विकास संभव हुआ।

पत्रकारिता मानव जीवन के भौतिक आत्मिक और आध्यात्मिक उत्कर्ष के साथ मूल्यगत परिपक्वता का मार्ग प्रशस्त करती है। मूल्य मनुष्य को समाज और संस्कृति से ही नहीं अपितु मानव अस्तित्व एवं अर्थ के साथ शिक्षा से संबद्ध करते हैं। इन मूल्यों का समावेश रूप जीवन मूल्य कहलाता है। जीवन मूल्यों का अस्तित्व पर्यावरण सामाजिक एंव वैज्ञानिक परिवर्तन पर अवलंबित है। पत्रकारिता मानवीय मूल्यों की शाश्वतना प्रदान कर शेष मूल्यों को परिवर्तित रूप में ग्राह्य नियंत्रित एवं लोकमंगलकारी बनाती है। सामाजिक एंव पारिवारिक मूल्य युग-सापेक्ष हो सकते हैं, किंतु मानवीय मूल्यों में कुछ शाश्वत मूल्य होते हैं। समता, न्याय सह-अस्तित्व, सहकर्म एवं सहयोग आदि युग एंव सत्ता सापेक्ष मूल्य हैं। शाश्वत मूल्य अर्मूत आदर्शात्मक और अनुभवगम्य होते हैं। मानव जीवन के समस्त अनुभवों के लिए ये मूल्य कसौटी का काम करते हैं। असल में मानव जीवन की सभी प्रक्रियाएँ एवं प्रेरणाएँ अभिव्यक्ति की अनिवार्यता से संदर्भित हैं। इसीलिए मनुष्य की अनिवार्यता सें संदर्भित हैं। इसीलिए मनुष्य ने अपनी दुनिया को अधिक विशिष्ट एंव व्यापक बनाने के लिए संचार के कई माध्यमों का आविष्कार किया। अभिव्यक्ति के नये-नये तरीके ईजाद किये। इस प्रकार साहित्य और पत्रकारिता अस्तित्व में आये।

कहा जा सकता है कि पत्रकारिता आधुनिक युग के सभ्य-समाज की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। जैसे हम लोकतन्त्र एवं उसके समता न्याय, स्वतन्त्रता तथा बन्धुत्व के मूल्य को अपनी चरम उपलब्धि मानते है, उसी तरह पत्रकारिता भी हमारे समय एवं समाज की बड़ी जरूरत है। यह भी उतनी ही बड़ी उपलब्धि हैं।

लोकतंत्र एवं पत्रकारिता के अंत: संबन्धों को लिखते हुए डॉ॰ रामचन्द्र तिवारी ने ठीक ही लिखा कि ''लोकतन्त्र मं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता एक प्रमुख स्तम्भ होती है इसलिए लोकतंत्र की आकांक्षाओ और उपेक्षाओं को पूरा करने का दायित्व पत्रों पर आता है।''[3] इस अवस्था में पत्रकार जागरूक चिन्तक के रूप में राष्ट्र को सतत आत्मालोचन की स्थिति में रखने वाला तत्व बन जाता है। वह एक तरह से समाज और राष्ट्र के लिए नियंता और नियामक की भूमिका अदा करता है। पत्रकारिता जन-जन को विश्व तथा देश में घटित घटनाओं की जानकारी देती है। पत्रकार

जनता की आँख तथा कान होते है। कहना न होगा कि पत्रकारिता आधुनिक सभ्य समाज की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यह वर्तमान की आधार एवं भविष्य की रूपरेखा है। इसके बिना जीवन अन्धकारमय एवं खाली-खाली लगने लगता है।

एम स्टर्डम शहर की एक दिलचस्प घटना है कि वहाँ एक बार सुबह में समाचार पथ नहीं आया। जिसके चलते लोग काम करने नहीं गए। बकिंघम में इसी घटना के कारण जनता ने आन्दोलन किया। छोटे शहर से बड़े शहर, महानगरों में तोड़-फोड़ की और नावे में जन समूह ने इस समाचार पत्र को अपना जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में स्वीकार कर लिया। इस आन्दोलन से यह प्रमाण मिलता है कि पत्र एवं पत्रकारिता हमारे जीवन का महत्वपूर्ण अंग हैं। यह हमारी राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक घटनाओं की गाथा है। इसी कारण समाचार पत्रों को लोकतांत्रिक देशों का ''स्थायी अधिवेशन'' कहते है। चर्चिल ने प्रेम और समाचार पत्र उद्योग को ''एक आजाद नागरिक के सभी अधिकारों की रक्षा करते रहने वाला जगत का प्रहरी''[4] कहा है, और जैफसेन ने समाचार विहीन शासन व्यवस्था को निष्कंटक राजशाही[5] की संज्ञा दी है। बेडल फिलिप्स ने तो स्पष्ट लिखा है कि ''मुझे समाचार पत्र निकालने दो फिर इस बात की मैं परवाह नहीं करता कि कौन धर्म का नियामक है और कौन कानून का निर्माता''[6] कहा जा सकता है कि समाचार पत्र मानवीय जीवन से संबंधित दिलचस्प घटना प्रसंगों का रोज नामचा हैं। वह मनुष्य के जीवन को प्रभावित करता है। लोगों को घटनाओं और प्रभावों की समझ देता है। समझ के अलावा वह परिस्थिति विशेष अवधि में प्रकाशित होता है, उसकी तय-शुदा कीमत होती है और वह जन सामान्य को सहज उपलब्ध होता है। समाचार-पत्रों में सुरूचि तथा सम्मान के नियमों का अनुपालन किया जाना आवश्यक हैं। इनमें विषय की दृष्टि से राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, साहित्य, बाल साहित्य, फिल्म, टीवी, शिक्षा, मौसम, संगीत, शोक समाचार, व्यापार वाणिज्य तथा कृषि आदि का समावेश होता है।

सुप्रसिद्ध संपादक एंव राष्ट्रभक्त विष्णु पराड़कर के अनुसार ''पत्रकार का स्थान आधुनिक समाज में बड़े महत्व का है। समाज के जीवन में जिन निर्णयों पर समाज का जीवन अन्त में निर्भर करता है उसके बारे में उचित जानकारी प्राप्त करना, उनके संबंधों में जनता का निर्माण और नेतृत्व करना, उस मत को प्रकट करना तथा उससे अधिक लाभ जनता को पहुँचाना एक आदर्श पत्रकार का कर्तव्य है।''[7]

हिंदी एक पत्रकारिता शब्द अँग्रेजी के जर्न-लिज्म शब्द से व्युत्पन्न है। जर्नलिज्म शब्द जर्नल से उत्पन्न हुआ है, 'जर्नल' शब्द का अर्थ है-दैनिक विवरण। मूलत: शब्द अपनी उत्पति के कार्य का विवरण प्रस्तुत करना।

अत: जर्नल के लिए मैगजीन शब्द का प्रयोग होता है। हिन्दी मैगजीन को पत्रिका कहा जाता है। धीरे-धीरे जर्नलिज्म कार्य का विस्तार होता गया और पत्रिका के अन्तर्गत दैनिक समाचार पत्र साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक और वार्षिक आदि नियंत्रकालीन पत्रिकाओं के अलावा आकाशवाणी, दूरदर्शन, फिल्म आदि जनसंचार के विविध माध्यमों से पत्रकारिता जुड़ गई है। इसमें लेखन-संपादन, समाचार-संकलन, प्रसारण, विज्ञापन के साथ-साथ दैनिक जीवनानुभव एवं राजनीतिक सामाजिक आर्थिक तथा धार्मिक परिस्थितियों को भी प्रस्तुत किया जाता है।

डॉ॰ वेदप्रताप वैदिक पत्रकारिता के महत्व पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं- ''विधायिका, कार्यपालिका तथा खबरपालिका भी लोकतंत्र का महत्वपूर्ण स्तंभ है। पत्रकार को भी विशेषाधिकार की आकांक्षा न रखते हुए न्यायाधीश की-सी निष्पक्षता और योद्धा की निर्भिकता के साथ पत्रकारिता में प्रवेश करे।''[8] पत्रकारिता के लिए ये सब आचार संहिताएँ जरूरी है।

पत्रकारिता के स्वरूप के सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि यह आधुनिक विश्व का प्रतिनिधि सांस्कृतिक अभिकर्ता भी है। दुनिया भर की सांस्कृतिक गतिविधियों पर विविध कोणों के साथ विचार करने का कार्य पत्रकारिता ने किया है। आधुनिक विश्व में हो रहे सांस्कृतिक संचेतना के संवहन एंव उसे पुष्ट करने में दुनिया भर में अहम भूमिका निभायी है। हिन्दी पत्रकारिता के सन्दर्भ में अपनी बात करते हुए राजेन्द्र परदेशी ने ठीक ही कहा है कि ''स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व पत्रकारिता जन-जागृति और स्वतन्त्रता संघर्ष को गति प्रदान करने का साधन या समाचार पत्रों के प्रकाशकों और संपादकों का एक पैर जेल में रहता था और दूसरा पैर बाहर।''[9] इसी लेख में उन्होने पत्रकारिता के महत्व को उजागर करते हुए ''भारत मित्र'' के संपादकीय का जिक्र किया है। कलकता से प्रकाशित ''भारत मित्र'' के 17 मई 1878 के अंक के संपादकीय में बहुत ही स्पष्टता के साथ यह बताया गया था कि ''समाचार-पत्रों से जो उपकार होता है, इस विषय में बहुत लिखने का प्रयोजन नहीं है, क्योंकि जब तक जिस देश में, जिस भाषा में और जिस समाज में समाचार-पत्र का चलन नहीं तब तक उसकी उन्नति की आशा भी दुराशा मात्र है। समाचार-पत्र प्रजा का प्रतिनिधि स्वरूप होता है और मुख्य तो हृदय संस्कार करने को जैसा ये समर्थ है, वैसा तो कोई भी नहीं है।[10] डॉ॰ आलोक का मानना है कि ''प्रखर विचारों की पोषक पत्रकारिता ने एक दिव्य चेतना एक लोकमत के निर्माण में सराहनीय भूमिका निभाई है।''[11]

भारत के प्रधानमंत्री पं॰ जवाहर लाल नेहरू ने पत्रकारिता को आधुनिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग बताया। लोकतन्त्र के लिए प्राण बताया। उन्होने स्पष्ट किया कि प्रेस के शक्ति एवं दायित्व बहुत है।''[12] लोकतंत्र में पत्र-पत्रिकाओं का विशेष महत्व इस

कारण है क्योंकि ये जनभावनाओं को उद्घोषित करना है। एडमंड बर्क ने ''इसे चतुर्थ राज्य की संज्ञा दी है।''[13] लोकतांत्रिक व्यवस्था में इसके विशेष महत्वच के कारण ही इसे गतिमान संसद कहते है। किसी भी देश में लोकतंत्र की पहचान की कसौटी उस देश का प्रेस है।

निष्कर्ष :

अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता वास्तविक रंगमंच अखबारों की दुनिया है। इसी चौथी दुनिया में सत्त लोक एवं उसकी अभिव्यक्ति की गुणवत्ता की पहचान होती रहती है। पत्रकारिता की अपनी दुनिया का सच वास्तव में जनता से जुड़ा होता है। अपने समय एवं परिवेश के मूल्यों को पूरी सजगता के साथ आत्मसात करते हुए उसे जनता के बीच रखना होता है। तब जाकर पत्रकारिता अपनी उपादेयता को सिद्ध कर पाती है।

संदर्भ-सूची

1. डॉ॰ अर्जुन तिवारी, पत्रकारिता एंव राष्ट्रीय चेतना का विकास, पृ0 संख्या-15
2. वही, पृ0 सं0-15
3. डॉ॰ रामचंद्र तिवारी हिंदी पत्रकारिता स्वरूप एंव संदर्भ लेखक विनोद गोदरे पृ0सं0- 10 से उद्घृत।
4. डॉ॰ कृष्णानंद द्विवेदी बिहार को हिंदी पत्रकारिता पृ0 सं0-' 01 से उद्घृत
5. वही, पृ0 सं0-01
6. वही, पृ0 सं0-04
7. विष्णु पराड़कर हिंदी पत्रकारिता: स्वरूप एंव संदर्भ लेखक- विनोद गोदरे पृ0 सं0-15
8. डॉ॰ वेद प्रताप वैदिक राजस्थान विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाश संपर्क शिविर के संभाषण- 3 सं0- 86 को दिया गया वक्तव्य (हिंदी) पत्रकारिता स्वरूप एवं सन्दर्भ
9. राजेन्द्र परदेशी, मधुमती साहित्यिक पत्रिका जयपुर (राजस्थान)
10. वही पृ0 सं0 - 16 से उदृघृत
11. टी0डी0एस0 आलोक सांस्कृतिक पत्रकारिता पृ0 सं0-09
12. डॉ॰ अर्जुन तवारी, पत्रकारिता एवं राष्ट्रीय चेतना, पृ0 सं0-09
13. वही. पृ0 सं0 - 10 से उद्घृत